सौंदर्य की परिकल्पना
सारा ब्रीडलव वॉकर की कहानी

कैथेरीन लास्की

चित्रसज्जा : नेका बेनेट

हिंदी: योगेश

सारा ब्रीडलव वॉकर ने एक उजाड़, गरीबी और भेदभाव भरे बचपन से उठकर सफलता की गगनचुम्बी ऊंचाइयों की छुआ, जहाँ वह एक सफल व्यवसायी और प्रभावशाली समाज-सेवी महिला के रूप में प्रतिष्ठित हुई। उसने अपना नाम बदल कर मादाम वॉकर रखा, अपना स्वयं का व्यवसाय स्थापित किया, और स्वयं को एक शक्तिशाली अनुकरणीय महिला के रूप में प्रतिष्ठित किया। और इसके द्वारा उसने सिद्ध किया कि यदि किसी बात की परिकल्पना की जा सकती है , तो उसे हासिल भी किया जा सकता है।

सौंदर्य की परिकल्पना
सारा ब्रीडलव वॉकर की कहानी

कैथेरीन लास्की

चित्रसज्जा : नेका बेनेट

हिंदी: योगेश

प्राक्कथन

जब मैं एक छोटी बच्ची थी और इंडियनपोलिस में रहती थी, तो मुझे शिकंजी का ठेला लगाना बहुत प्रिय था। मेरी शुरूआती यादों में शामिल है वह दिन, जब मैं सिक्कों से भरा डब्बा लेकर माँ के पास रसोई में आई, तो उन्होंने कहा था, "शाबाश कैथरीन, आशा है भविष्य में तुम भी मादाम वॉकर की तरह सफलता को चूमोगी।"

मादाम सी जे वॉकर इंडियनपोलिस, इंडिआना की एक ऐसी अनुकरणीय महिला बन गई थीं, कि वहां की महिलाएं और बच्चियां सभी उनके नक़्शे कदम पर चलने का स्वप्न देखती थीं। महिलाओं में आर्थिक सम्पन्नता और स्वतंत्रता प्राप्त करने की क्षमता का वह जीता जागता उदहारण थीं। इस पुस्तक की नींव मेरे बचपन में ही रख दी गई थी, जब मैं मादाम वॉकर के चरित्र से अत्यंत प्रभावित हुई थी।

अपने शोध में मैंने मादाम वॉकर के बारे में बहुत से तथ्य खोजे, परन्तु फिर भी बहुत सी बातें अदृष्य रहीं। एक लेखक के नाते मैंने इन अदृष्य पहलुओं को अपनी कल्पनाशक्ति से भरने का प्रयास किया है, कि विशिष्ट परिस्थितियों में उन्होंने क्या मह्सूस किया होगा, या क्या चाहा होगा। मैंने उसके मुख में कोई शब्द नहीं डाले हैं। जो कुछ भी मैंने इस पुस्तक में उद्धृत किया है, वे मैडम वॉकर के द्वारा वास्तव में कहे गए शब्द ही हैं। पुस्तक में मैंने अफ्रीकन मूल के लोगों के लिए "अश्वेत" (black) शब्द का ही प्रयोग किया है, क्योंकि मैडम वॉकर के कालखंड में इसी शब्दावली का प्रयोग होता था।

मैं आभारी हूँ, मैडम वॉकर की प्र-प्र-पौत्री आलेलिए पैरी बंडल्स की, कि उन्होंने मेरे लिए इतना समय निकाला और इतनी उदारता पूर्वक इस पुस्तक के लिए जानकारी उपलब्ध कराई। मुझे यह जान कर बहुत ही प्रसन्नता हुई कि बचपन में सुश्री बंडल्स भी इंडियनापोलिस में मेरे घर से कुछ ही दूरी पर रहती थीं, और उसी उद्यान में साइकिल चलाती थीं, जहाँ मैं चलाती थी।
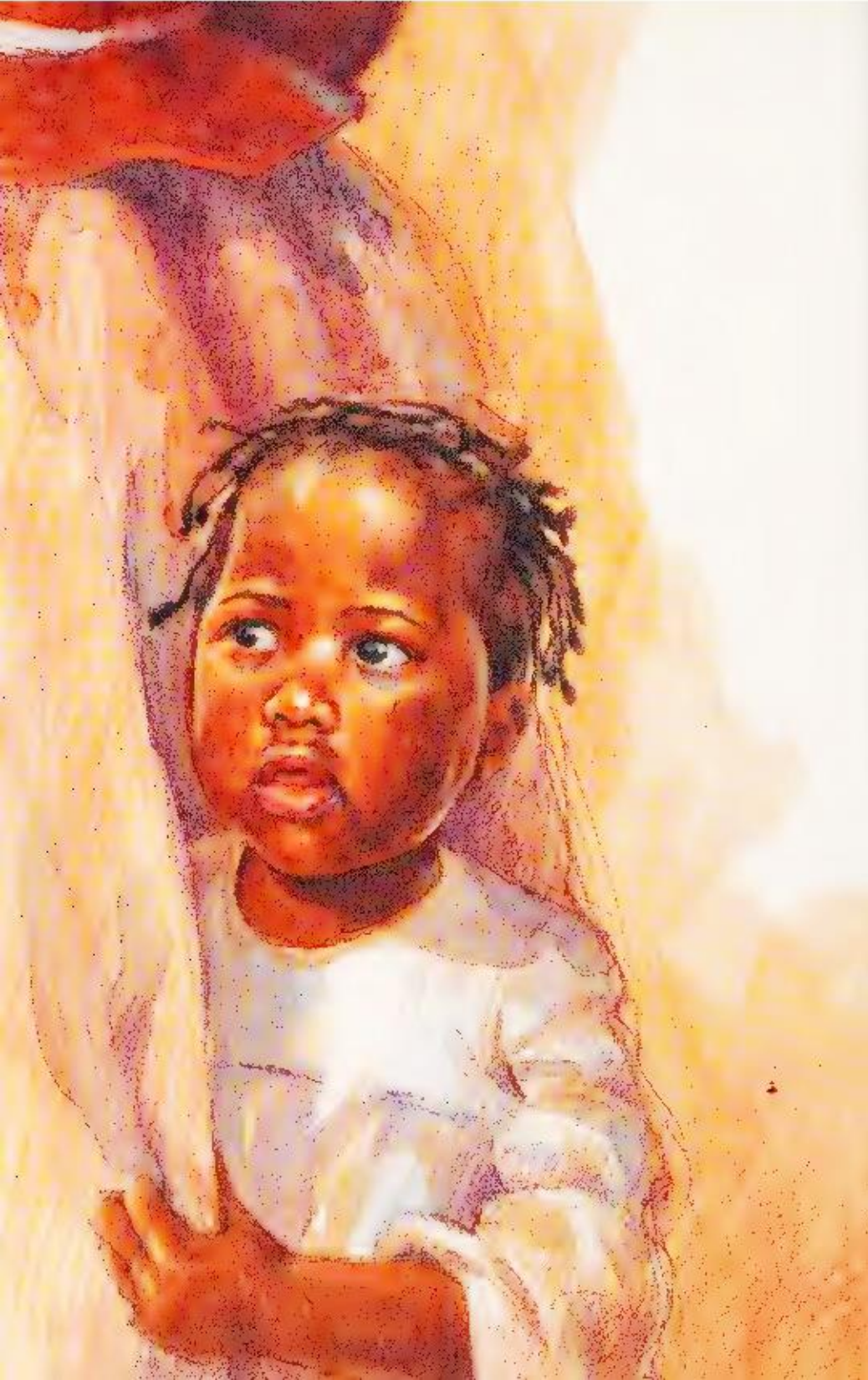
प्रथम अध्याय

लूसियाना का डेल्टा
१८७० का पूर्वार्ध

एक महिला और दो नन्ही बालिकाएं - सुबह के समय वे अधिक बातें नहीं करती थीं। कभी भी नहीं। ठण्ड बहुत अधिक थी। बहुत ठण्ड, और साथ में अँधेरा भी।

छोटे से कमरे में नन्ही सारा देख सकती थी, कि उसकी सांस नथुनों से निकल कर कुहासे में तब्दील हो जाती थी। उस कड़कड़ाती सर्दी में सारा ने थोड़ी देर तो अपनी माँ के आँचल में छिपने की कोशिश की, लेकिन माँ जल्दी ही व्यस्त हो गई, शाम के भोजन के लिए सब्ज़ियां काटने में। इस बीच सारा की बड़ी बहन लोवेनिया भोजन के लिए मांस पका रही थी, और सारा को भी नाश्ते के लिए मक्के का आटा गूँधना था।

जब उसके पिता और उसका भाई, अलेक्स, दोनों जाग गए, उसके बाद ही कुछ बातचीत शुरू हुई। बस कुछ ही शब्द, जैसे आज कौन खेत में क्या काम करेगा। अगर बुवाई का मौसम हो, तो हल और उसकी मरम्मत को लेकर कोई बात। और अगर कटाई का मौसम हो तो खेत के कीड़ों के मुताल्लिक कोई बात।

ब्रीडलव परिवार अब स्वतंत्र हो गया था। १८६५ में गुलामी प्रथा का अंत हो चुका था। सारा का जन्म २३ दिसंबर १८६७ को हुआ था, और वह मिनर्वा और ओवेन ब्रीडलव की सबसे छोटी बेटी थी, और वह अकेली थी जिसने अपनी पहली सांस आज़ाद हवा में ली थी। वे मिसिसिप्पी नदी के किनारे बसे लूसियाना प्रान्त के डेल्टा गाँव में रहते थे।

ब्रीडलव परिवार बंटाई पर खेती करता था, और वे अपने पुराने मालिक के कपास के खेत पर रहकर वहीं काम करते थे। उन्हें खेती के लिए सामान उसी मालिक से खरीदना होता था, और हल-बैल भी उसी से किराये पर लेने पड़ते थे। और जो भी पैदावार होती, वह उसी को बेचने होती थी, जिसकी कीमत भी वही तय करता था। यह लगभग गुलामी करने जैसा ही था, क्योंकि जितना वे कमाते नहीं थे, उससे ज़्यादा उन पर कर्ज़ा रहता था। लेकिन थे तो वे आज़ाद ही, और अगर आप आज़ाद हैं, तो आपको सपने देखने की भी आज़ादी है।

ओवेन और मिनर्वा ब्रीडलोव ने सपना देखा था, अपने बच्चों को पढ़ाने-लिखाने का। तो जब हल की मरम्मत और कपास की बात ख़त्म होती तो वे किताबों और पढ़ने-लिखने की बातें करते। अलेक्स, लोवेनिया और सारा को स्कूल भेजा गया, लेकिन स्कूल कुछ ही महीने खुलता था। कटाई के बाद, और अगली बुवाई से पहले। और काले बच्चों के स्कूल अक्सर "कु क्लक्स क्लान" व "वाइट ब्रॉदरहुड" नामक गोरों की संस्थाओं द्वारा जला दिया जाते थे, क्योंकि वे कालों से घृणा करते थे।

"कु क्लक्स क्लान" तो बहुत ही भयावह थे। उसके सदस्य स्वयं को योद्धा कहते थे, और हाथों में मशालें लिए सफ़ेद लम्बे टोपे पहने, घोड़ों पर सवार हो गांवों में घूमा करते थे। सारा और उसके भाई-बहन ने देखा था कि रात को उन्होंने स्कूल को आग लगा दी थी। अगले दिन उन्हें स्कूल का मलबा ही वहां दिखाई दिया। क्लान के लोगों को लगता था कि शिक्षित काले लोग खतरनाक होते हैं। अगर काले लोग पढ़-लिख गए, तो ये पता नहीं क्या कर डालेंगे।
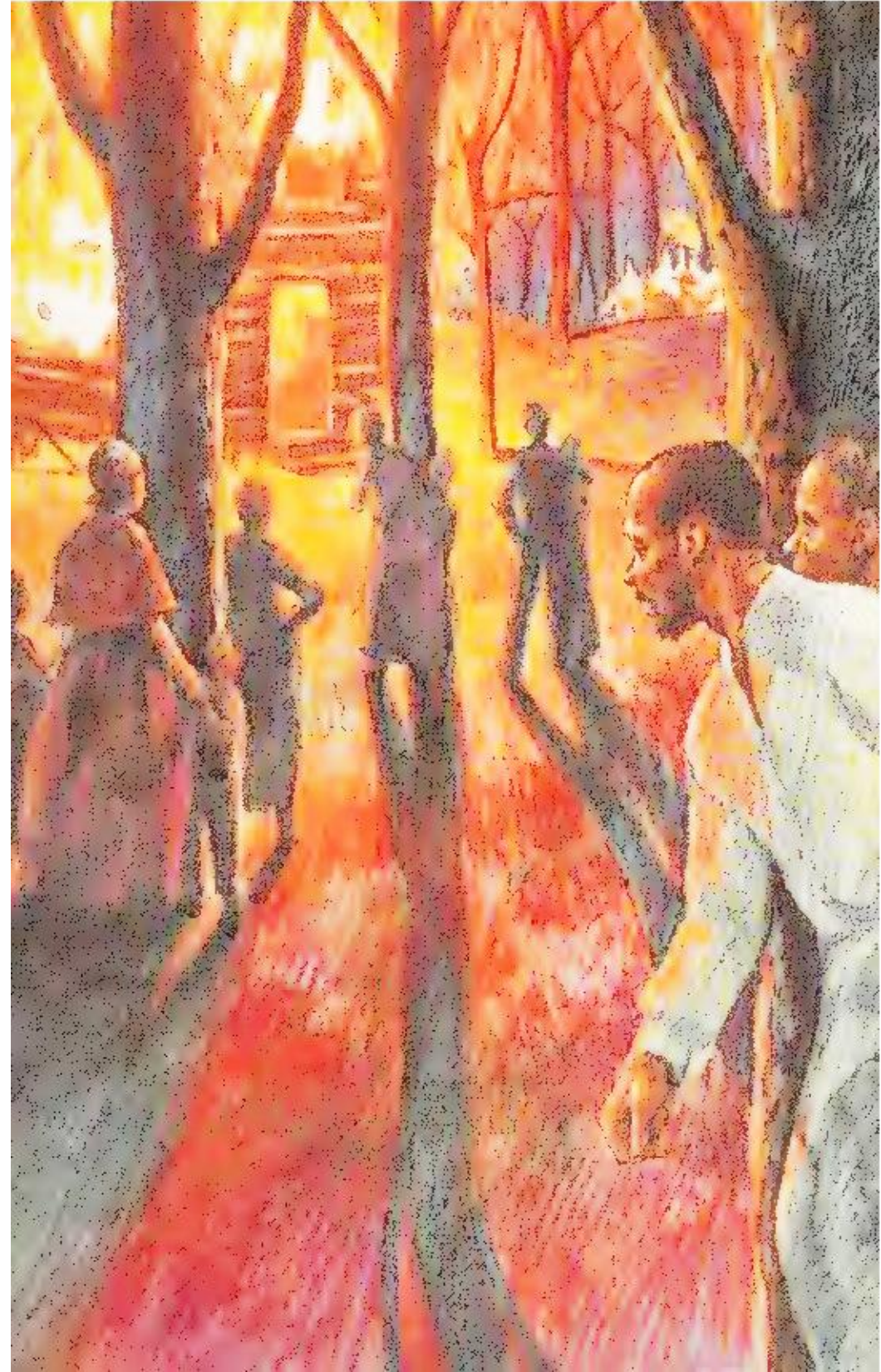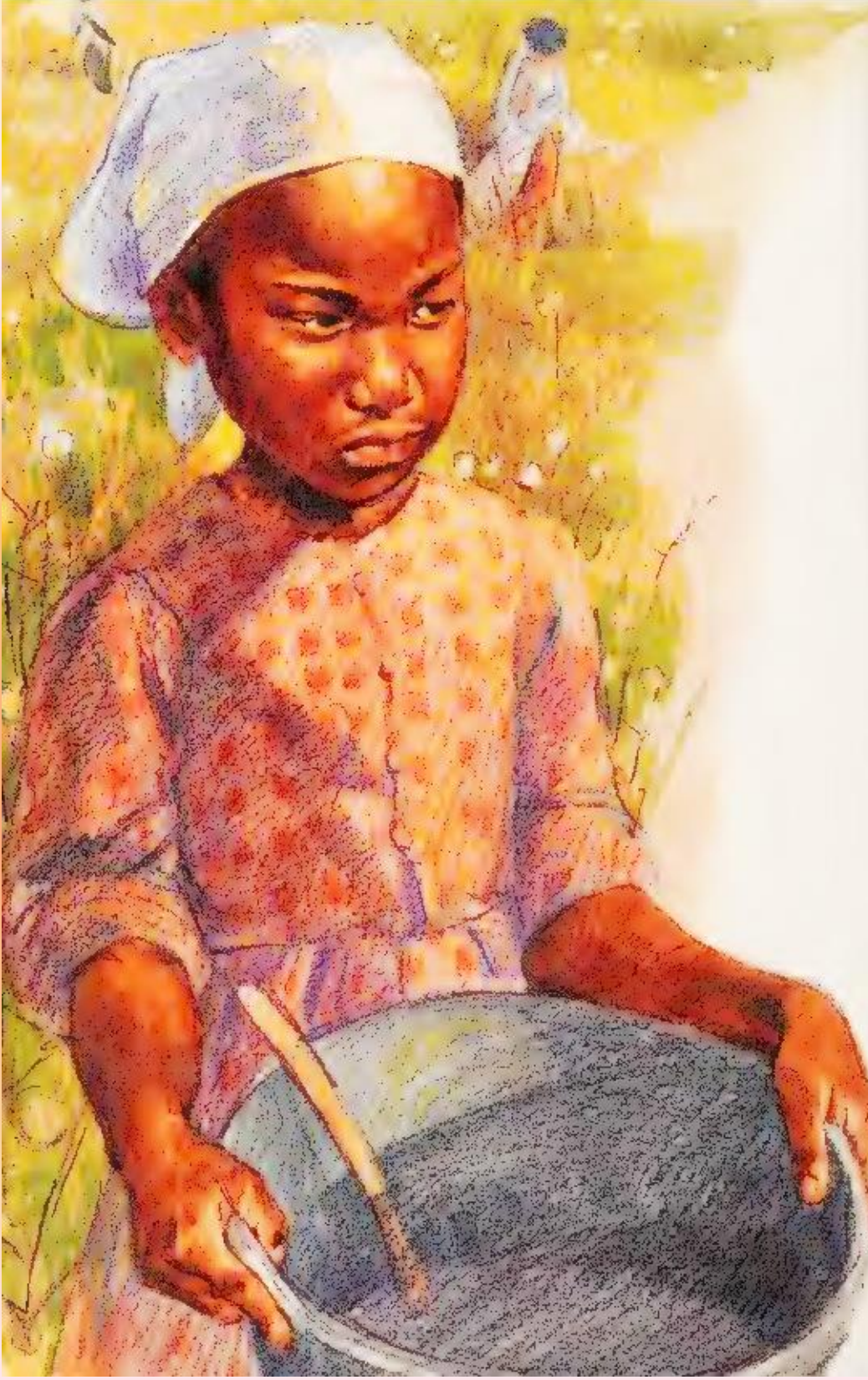
दूसरा अध्याय

डेल्टा, लुसिआना

१८७० के दशक का मध्यकाल

कपास के खेतों पर सूरज की रौशनी पड़ने से पहले ही ब्रीडलव परिवार वहां पहुँच जाता था। सारा ५ वर्ष की आयु से ही खेतों में काम कर रही थी। वह पानी ले जाने का काम करती, और जुताई के बाद खेतों में बीज रोपती। दस साल की होते-होते वह हल चलाने लायक भी हो गई।

बारह घंटे खेत में काम करने के बाद सारा घर लौटती और अगले दिन के भोजन के लिए आलू खोदने लगती। फिर वह मुर्गियों को दाना-पानी देती, और आँगन की सफाई करती। शनिवार के दिन माँ और दोनों बेटियां, अपने और अपने गोरे मालिकों के कपड़े धोतीं। इस काम के लिए उन्हें हफ्ते का मात्र एक डॉलर मिलता था।

अधिकांश समय चिलचिलाती गर्मी पड़ती थी। इसलिए खेतों में काम करते समय माँ-बेटियां अपने सिर को कपड़े से ढक कर रखती थीं। यह कपडा उनके पसीने को सोख लेता था, और उनके बालों को धूप से बचाता था।
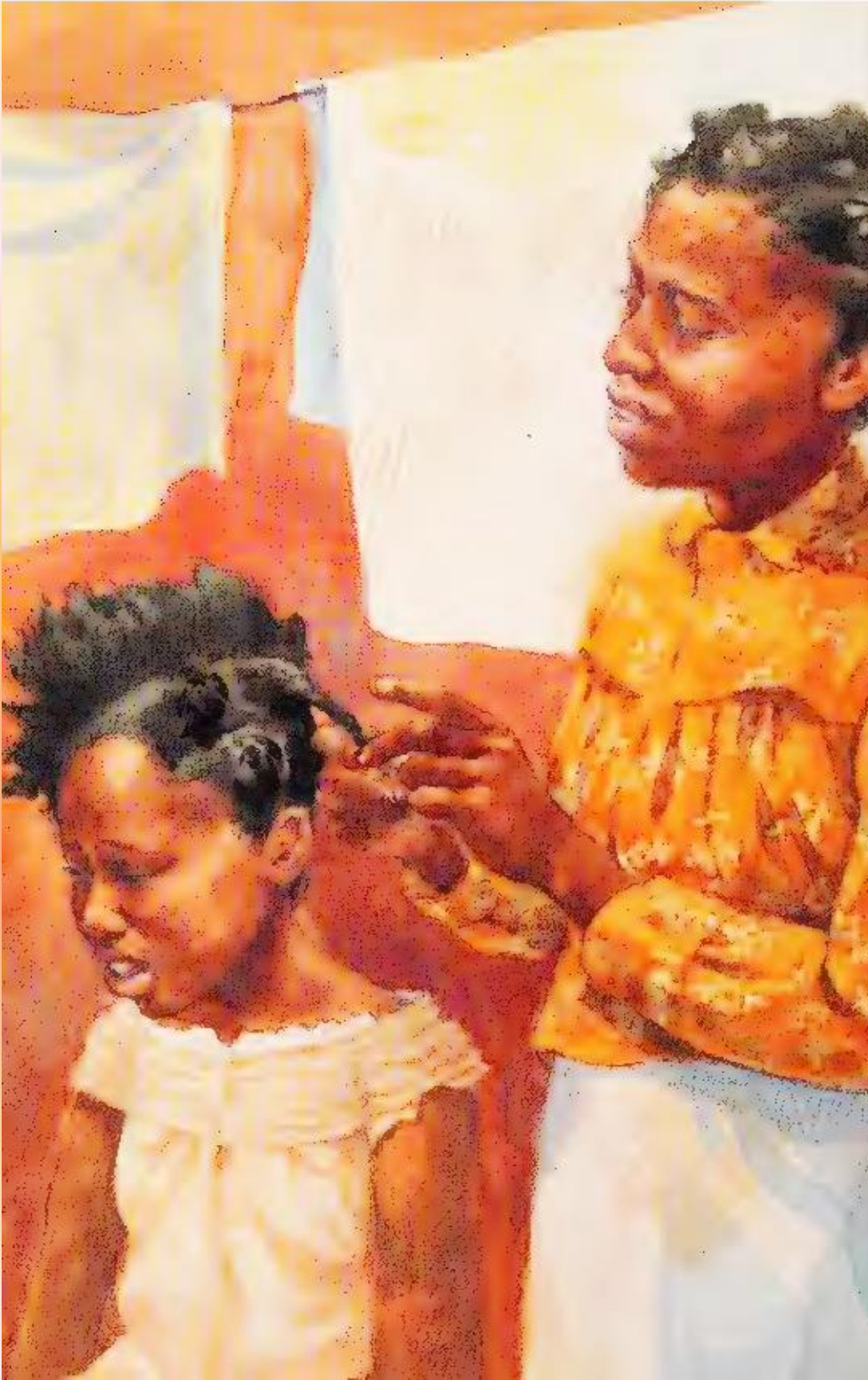
रविवार के दिन वे सर के कपडे को उतार देतीं, और गिरिजाघर जाया करती थीं। जब मिनर्वा के पास समय होता, और उसे अपने बेटियों का श्रृंगार करने की इच्छा होती, तो वह उनके बालों को गूंथ कर उनकी कई चोटियां बना देती। चोटियां इतनी कस कर बनाई जातीं कि उनके सर में खिंचन होने लगती, और सारा व लोवेनिया न तो आँखें झपका पातीं और न ही मुस्कुरा पातीं। लेकिन उसके बाद जब बालों को खोल कर उन्हें काढ़ा जाता तो वे सीधे रहते और उलझते नहीं थे, और सारा अपना सारा कष्ट भूल जाती।
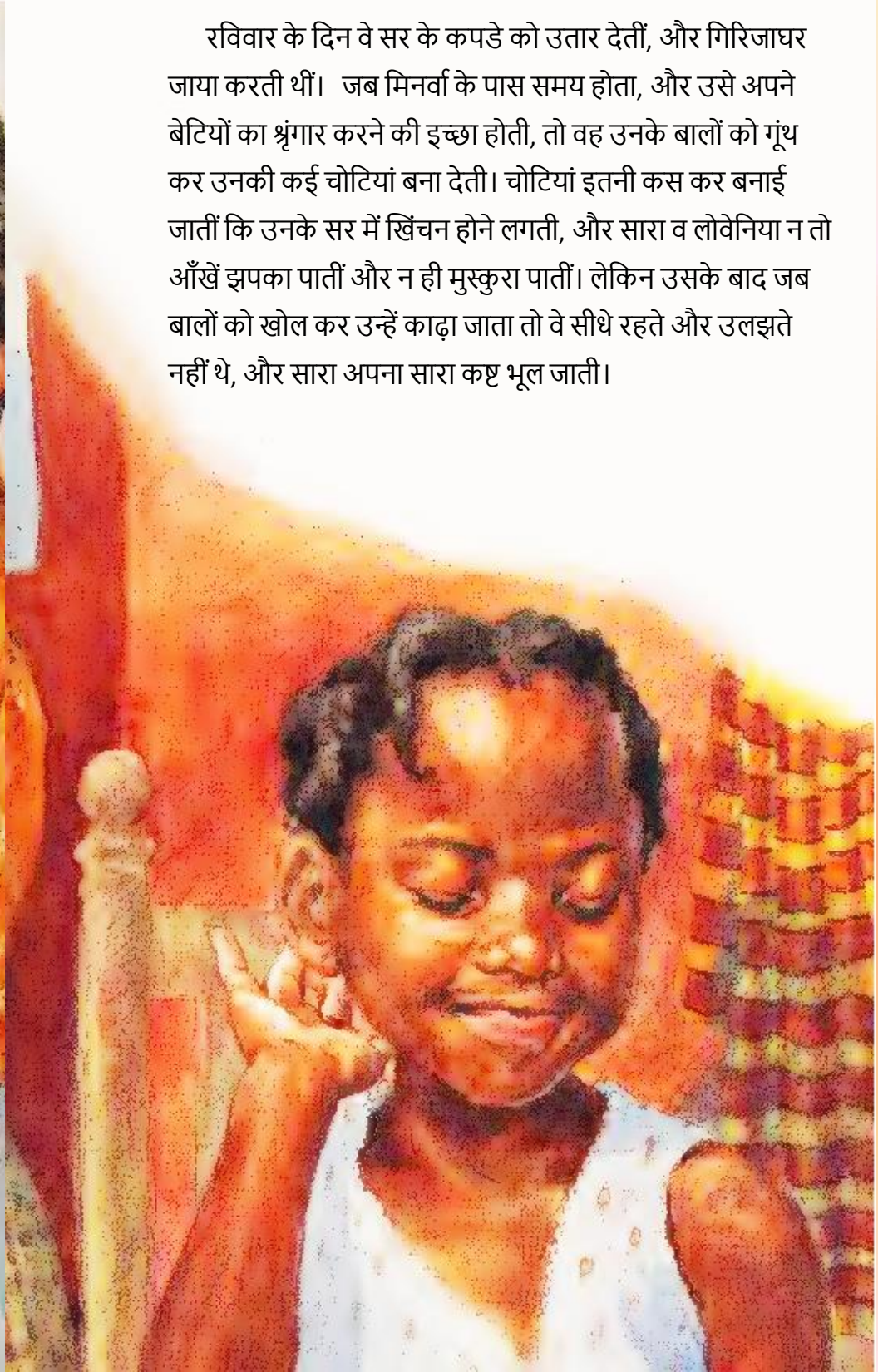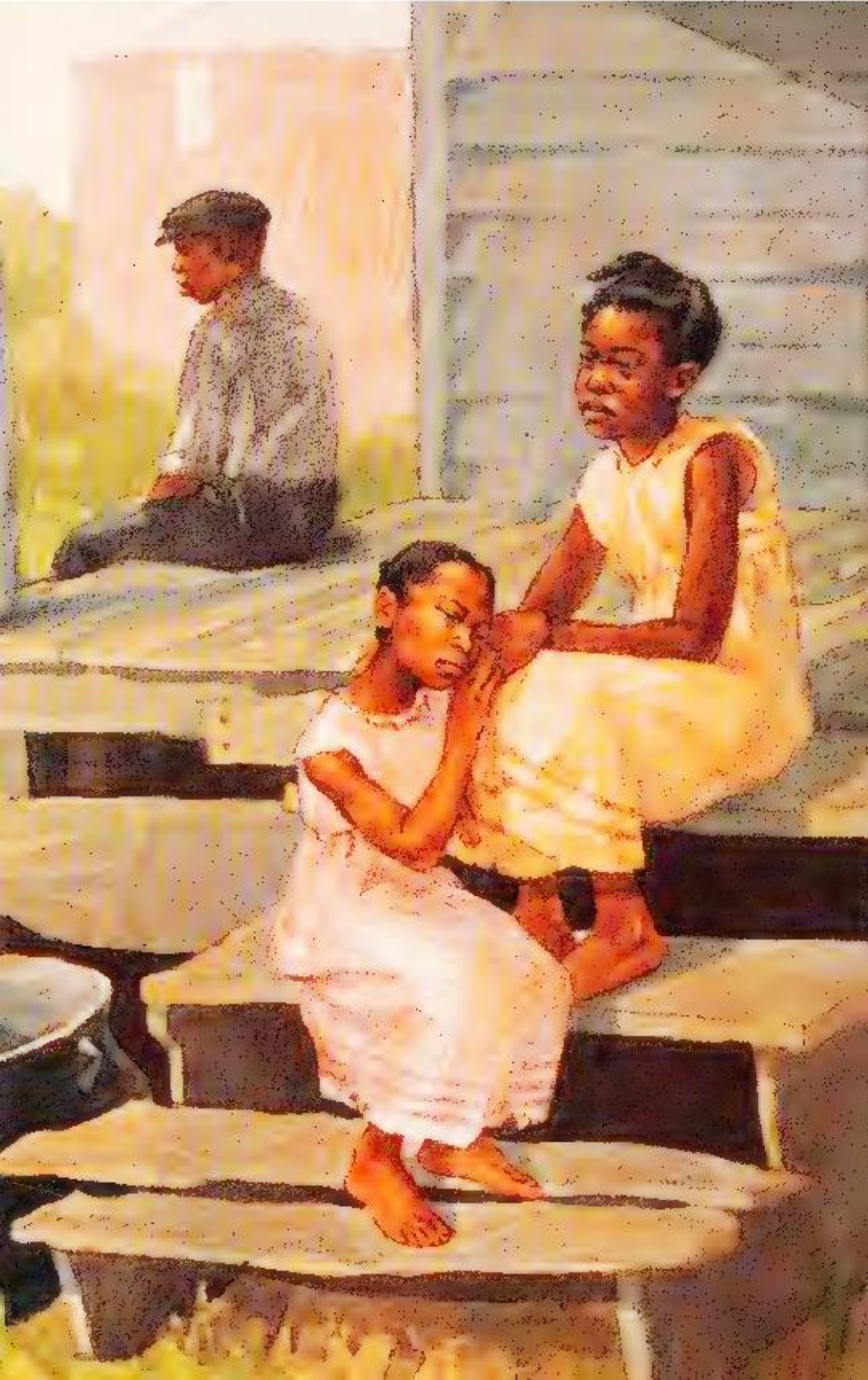
तीसरा अध्याय

डेल्टा, लुसिआना
विक्सबर्ग, मिसिसिप्पी
१८७५-१८८२

मिसिसिप्पी नदी के निचले हिस्सों में बसे नगरों में, जहां मौसम गर्म और उमस-भरा रहता था, पीले-बुखार और कॉलरा का खतरा लगातार बना रहता था। गरीबी और अत्यधिक शारीरिक श्रम के कारण ओवेन और मिनर्वा इन बीमारियों से लड़ नहीं सके। १८७५ तक सारा, लौवेनिया और अलेक्स अनाथ हो गए। सारा तब केवल सात वर्ष की थी। उसे अपने माता-पिता की याद बहुत सताती, और उनके सपनों की भी। काम की खोज में एलेक्स विक्सबर्ग चला गया, जो नदी के दूसरी ओर एक बड़ा शहर था। सारा और लोवेनिया दिन-रात कपड़े धोने का काम करतीं, क्योंकि उनके पास जिन्दा रहने का यही एक साधन था।

दोनों बच्चिंयां किस्मतवाली थीं कि इन बीमारियों से बची रहीं, लेकिन कई गोरे लोग जो उन्हें कपडे धोने का काम देते थे, इन बीमारियों की चपेट में आकर मर गए। फिर मिसिसिप्पी के डेल्टा में अकाल पड़ गया। अब इन लड़कियों के पास पैसा कमाने का कोई साधन नहीं बचा।

अपनी मुसीबतों से बचने के लिए सारा और लोवेनिया नदी तक जातीं और विक्सबर्ग से लौटी नाव से उतरते मुसाफिरों को देखतीं। इन नावों पर सवार महिला यात्रियों के देख कर सारा को बहुत अच्छा लगता था। वह बड़े बड़े सुन्दर हैट पहने रहती थीं और
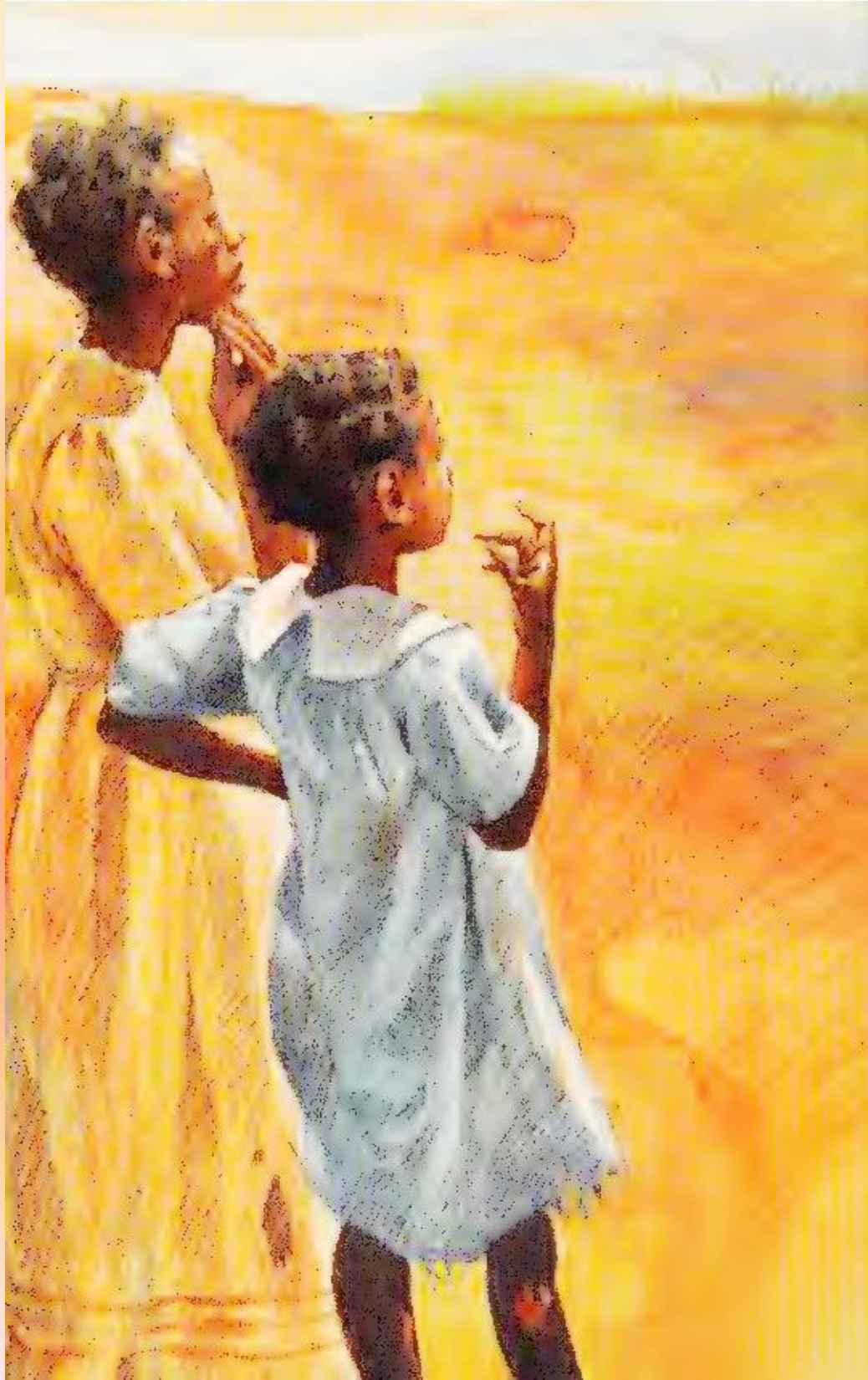
उसके पीछे से उनके घने जूड़े लटके रहते थे। उनके भड़कीले कपड़ों की सरसराहट मानो सारा को साफ़ सुनाई देती थी। लेकिन उनके कपड़ों से भी अधिक जो बात सारा को प्रभावित करती थी, वह थी उनकी आत्म-विश्वास से परिपूर्ण मुखमुद्रा और चाल-ढाल।

अंततः दोनों लड़कियों ने नदी पार विक्सबर्ग जाने का मन बना ही लिया, क्योंकि उन्होंने सुना था कि वहां रोज़गार आसानी से मिल जाता है। उन्होंने उसी नाव से नदी पार की जिस पर वे महिलाएं जाया करती थीं। फर्क इतना ही था कि उनके मुकाबले सारा और लोवेनिया बहुत ही दुबली-पतली थीं, और उनके कपडे फटे पुराने थे।

अधिकांश गोरे लोगों को लगता था कि दास-प्रथा की समाप्ति के बाद उनके लिए मुश्किल समय आ गया है। अपनी परेशानियों का दोष वे काले लोगों की आज़ादी पर मढ़ देते थे।
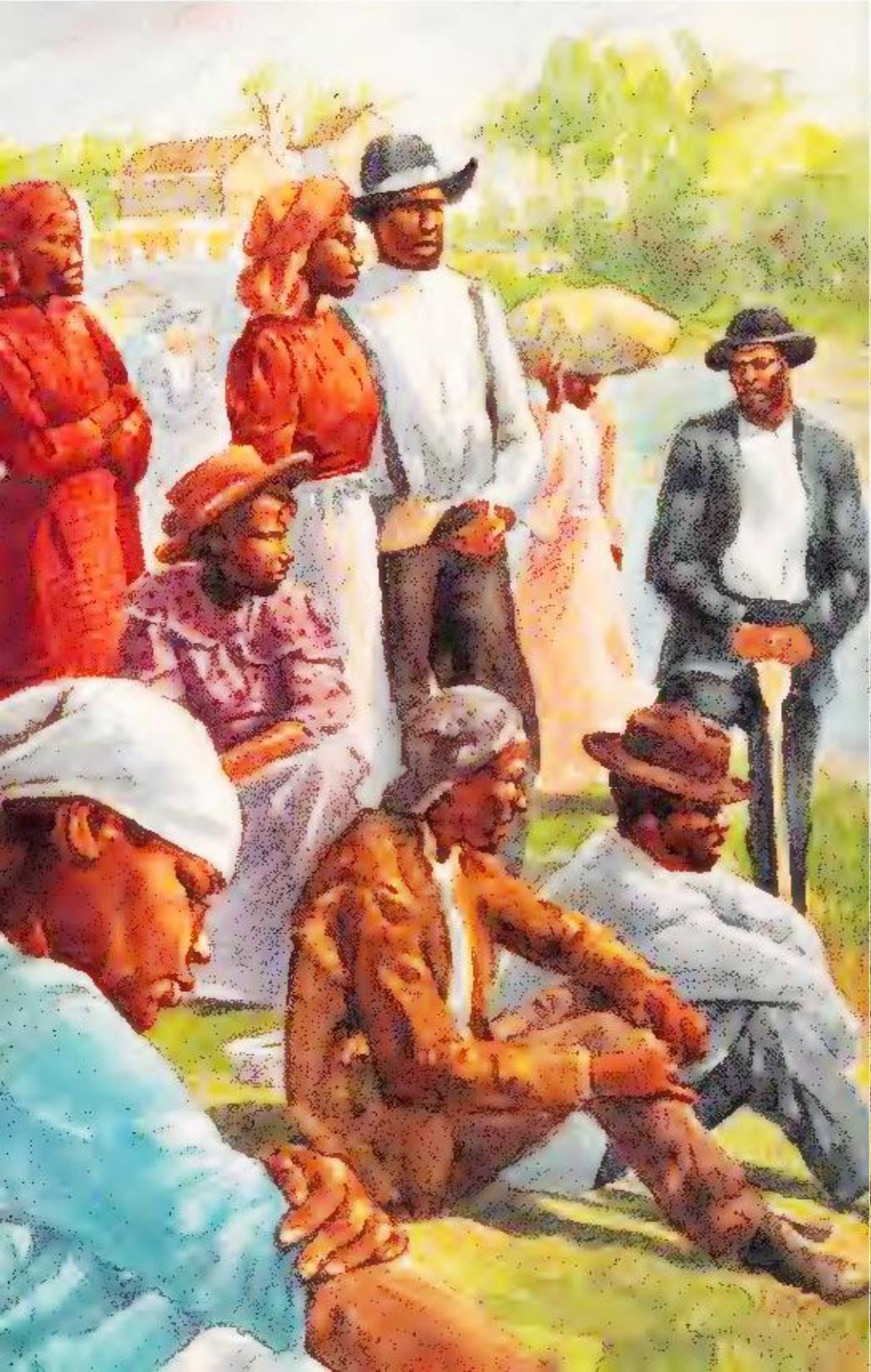
१८८० के दशक में अक्सर ही काले लोगों को कु क्लक्स क्लान या अन्य नफरती गोरों की संस्थाओं के लोगों की भीड़ घेर कर मार डालती थी। बेसहारा और भयभीत काले लोग दक्षिण से बच कर उत्तर की ओर जाने के सपने देखने लगे।

सारा और लोवेनिया के विक्सबर्ग पहुँचने के कुछ समय बाद ही एक घुमन्तु पादरी यह प्रचार करता दिखा कि जल्दी ही एक जहाज़ आएगा जो काले लोगों को अफ्रीका ले जाएगा जहाँ वे पूरी तरह आज़ाद और सुरक्षित होंगे। लोगों के झुण्ड के झुण्ड नदी किनारे उस जहाज़ का इंतज़ार करते रहे, लेकिन वह कभी आया नहीं।

विक्सबर्ग आने के बाद सारा की ज़िन्दगी बेहतर होने के बजाय डेल्टा के मुकाबले और बदतर हो गई। लोवेनिया ने एक आदमी से शादी कर ली, जो बहुत क्रूर और खतरनाक किस्म का व्यक्ति था, और तीनों एक बहुत छोटे से झोंपड़े में रहते थे। जब सारा यह परिस्थिति और सहन न कर सकी तो उसने मोसेस मकविलियम्स नाम के एक मज़दूर के साथ शादी कर ली और चली गई। तब वह चौदह वर्ष की थी।
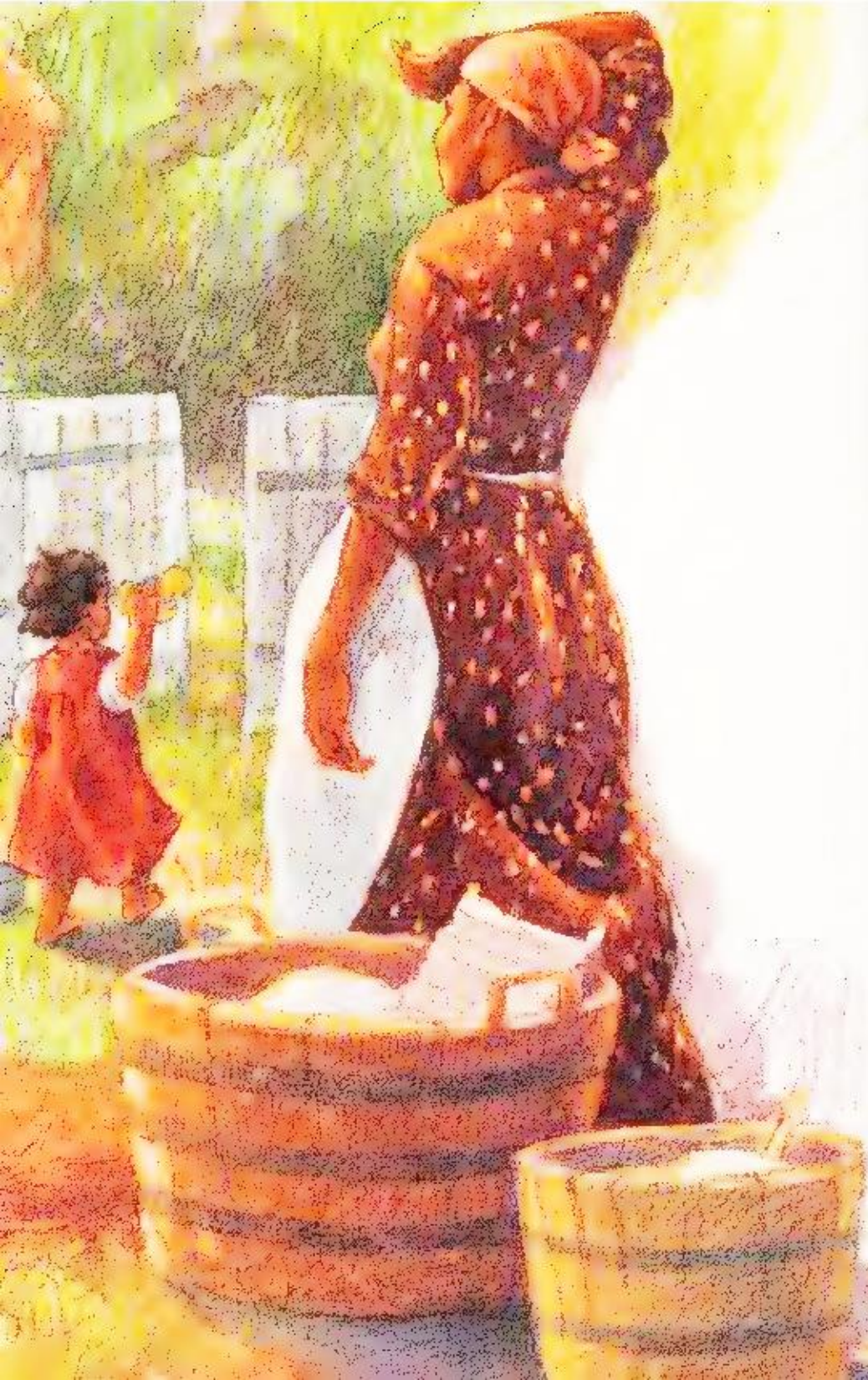
चौथा अध्याय

सेंट लुइस, मिसौरी
१८८० के दशक का उत्तरार्द्ध

सारा ने अपनी बेटी लेलिया को पुकारा, और कहा कि वह बाड़े के बाहर न जाये। उसके सर के दुपट्टे से पसीना बह रहा था। उसकी कमर दुःख रही थी, और वह फिर टब में पड़े कपड़ों को धोने में जुट गई। वह अभी २० वर्ष की भी नहीं हुई थी, लेकिन वह माँ बन कर विधवा भी हो चुकी थी। मोसेस मकविलियम्स एक अच्छा इंसान था, लेकिन लेलिया तीन वर्ष की होती इससे पहले ही उसका देहांत हो गया।

सारा अब सेंट लुइस आ गई थी, क्योंकि उसने सुना था कि कपडे धोने वालों की यहाँ अच्छी कमाई होती है। सेंट लुइस बहुत तड़क-भड़क वाला नगर था, शोर-शराबे से भरपूर, जहाँ बहुत से मदिरालय, नृत्य-घर, जुआखाने वगैरा भी थे, और बहुत से मेहनतकश लोग भी। और यहाँ देश भर की तुलना में काले लोगों की संख्या बहुत अधिक थी।

रोज़ाना रात को जब सारा अपना काम समाप्त कर लेती, वह अपने सर पर बंधा दुपट्टा खोलती तो देखती कि उसके बाल टूटने लगे हैं। वर्षों के कुपोषण और कड़ी मेहनत के कारण उसके बाल बहुत ही कड़े और अस्वस्थ दशा में थे, और अब वह गंजेपन की ओर बढ़ रही थी। उसने बाल घने करने वाली अनेक दवाओं का प्रयोग किया था, लेकिन सब बेकार। कई दवाओं से तो उसके बाल और भी ख़राब हो गए।
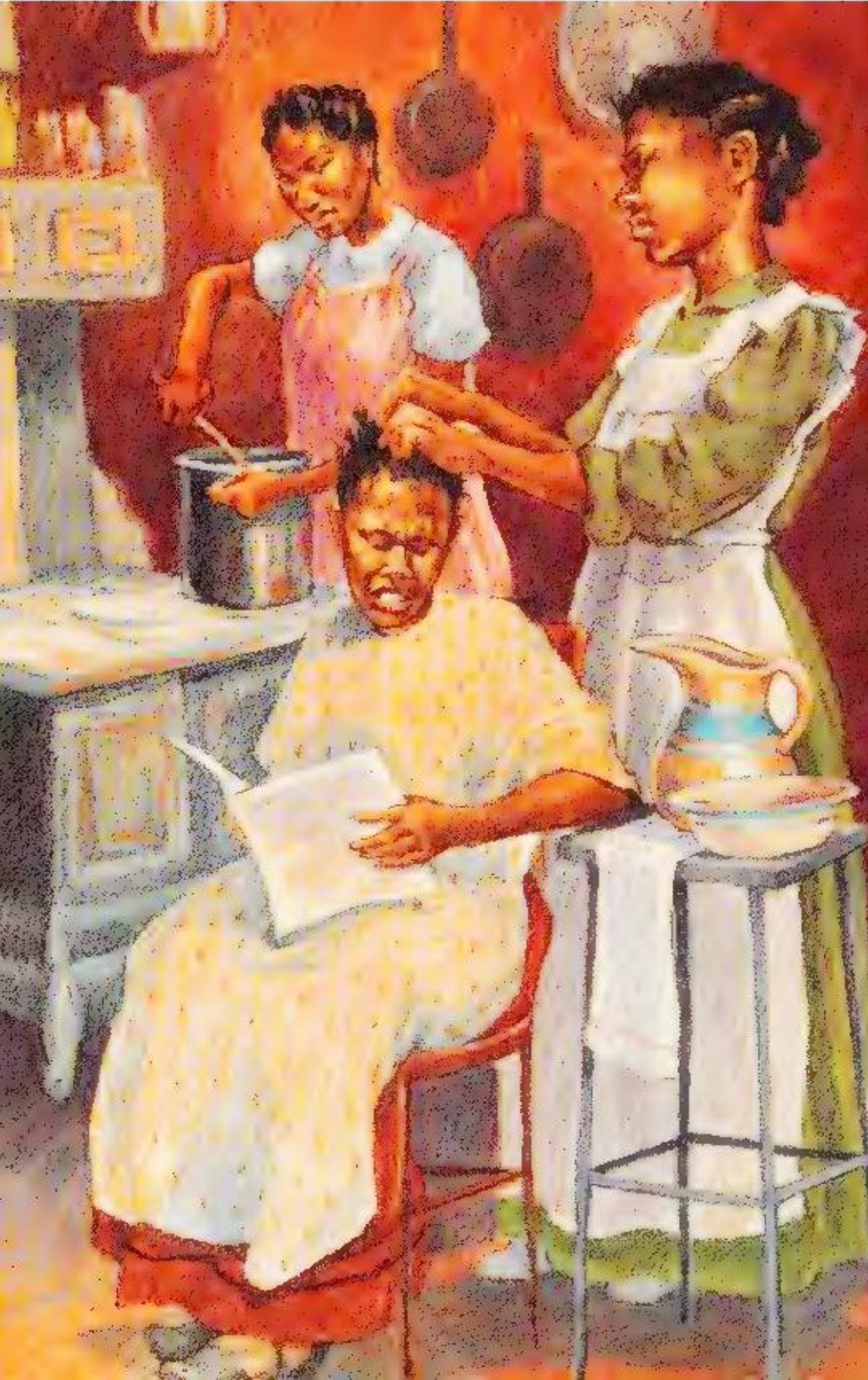
सारा ने महिलाओं के बालों का उपचार करने वाले कई स्थानों पर काफ़ी समय गुज़ारा था, जहाँ वे बालों को सीधा करके उन्हें ठीक करने का प्रयास करते थे। ऐसे स्थानों की हवा गर्म ग्रीज़, पिघलते मोम, और अनेक रसायनों की महक से भरी रहती थी, और महिलाओं के बालों में ये सारे गर्म पदार्थ डाले जाते थे, जिससे उनके सर की त्वचा और बाल झुलस जाते थे।

सप्ताह में कुछ दिन सायंकाल सारा सबसे अच्छे वस्त्र पहन कर निकलती और सेंट पॉल अफ्रीकन मेथोडिस्ट चर्च के लिए चंदा एकत्र करती। चर्च का उसके जीवन में विशेष महत्त्व था। गृह युद्ध के पहले, जब काले लोगों के लिए शिक्षा ग्रहण की मनाही थी, तब चर्च ने इस नियम का उल्लंघन करके उन्हें पढ़ना लिखना सिखाया था।

हालाँकि वह एक गरीब कपडे धोने वाली थी, हर हफ्ते सारा अपनी कमाई में से कुछ पैसे बचा कर अलग रख लेती थी। उसने दृढ निश्चय किया था कि यद्यपि वह स्वयं पढ़-लिख नहीं सकी, वह अपनी बेटी को ज़रूर शिक्षित करेगी। १९०२ तक सारा ने इतना पैसा बचा लिया था कि वह लेलिया को नॉक्सविल कॉलेज भेज सके, जो टेनेसी में काले लोगों के लिए खोला गया एक छोटा कॉलेज था।
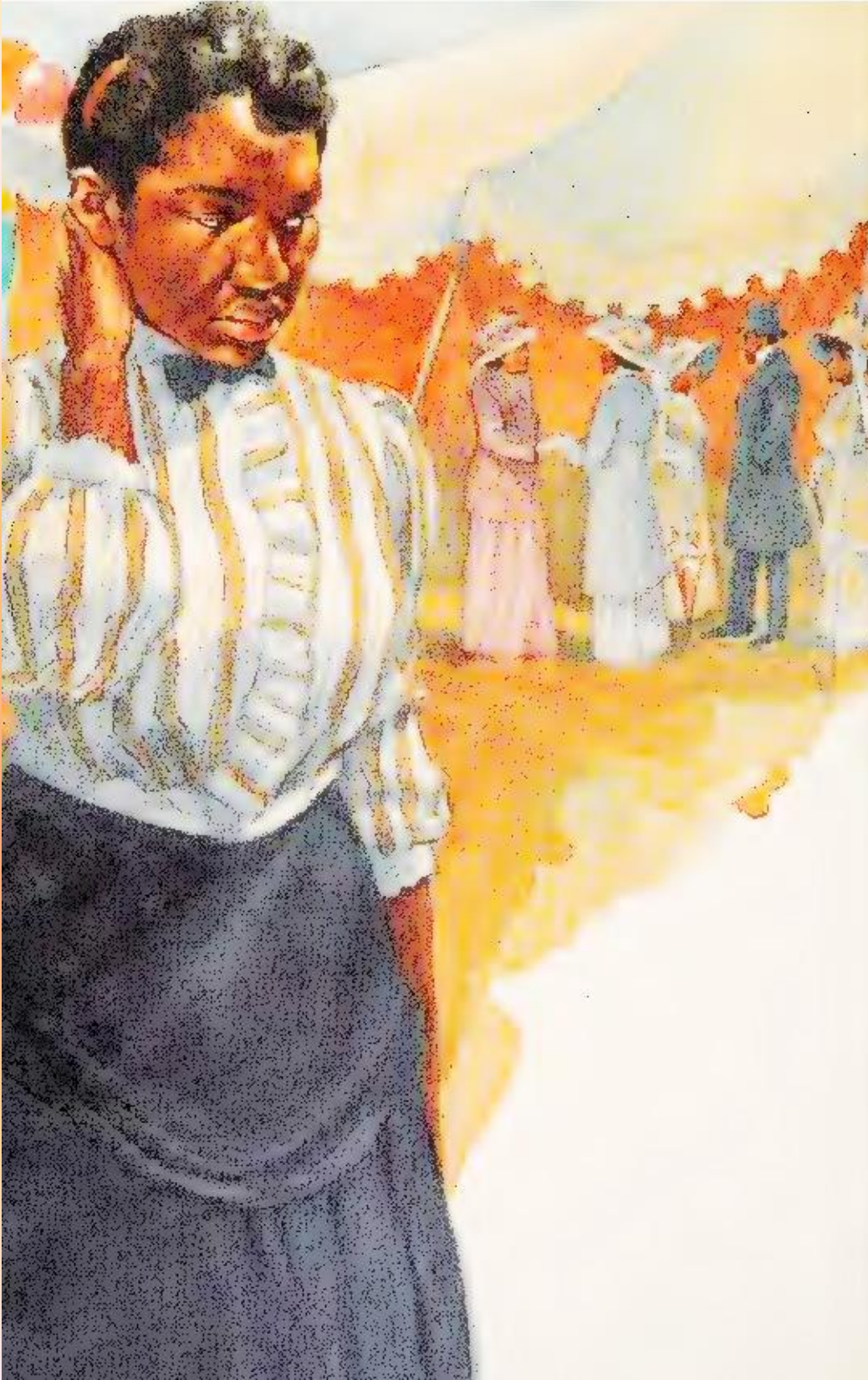
अध्याय पांच

सेंट लुइस, मिसौरी
१९०४

१९०४ में आयोजित सेंट लुइस का विश्व मेला पूरे एक वर्ष तक चला था, जिसके कारण पूरे शहर में अत्यधिक उत्साह का वातावरण था। अनेक गणमान्य लोग आये हुए थे, सुप्रसिद्ध गोरे लोग और प्रसिद्ध काले लोग भी, जैसे कि कवि पॉल लॉरेंस डनबार, डब्लू ई बी डु-बोइस जैसे विद्वान्, समाचार-पत्र मालिक टी. थॉमस फार्च्यून, और शिक्षाविद बुकर टी वाशिंगटन।

जिस रात बुकर टी. वाशिंगटन की पत्नी मार्गरेट ने अश्वेत महिलाओं की राष्ट्रीय संस्था की सेंट लुइस शाखा को सम्बोधित किया, सारा भी वहां मौजूद थी। मार्गरेट ने अश्वेत महिलाओं के विकास की बात की, और अपने श्रोताओं को संस्था के नीति-वाक्य के बारे में याद दिलाया जिसका मंतव्य था कि हमें सबको साथ लेकर आगे बढ़ना है।

न केवल मार्गरेट बहुत अच्छी वक्ता थी, उसकी वेश भूषा भी अति उत्तम थी। उसका लहज़ा आत्म-सम्मान से भरपूर था, उसके केश भरे-पूरे और स्वस्थ थे। सारा को श्रीमती वाशिंगटन ठीक वैसे ही लगीं जैसी कि डेल्टा में नौका से उतरने वाली सजी-धजी महिलाएं, जिन्हें उसने बहुत पहले देखा था। उनमें ठीक वैसा ही आत्म-विश्वास और स्वाधीनता का भाव था। सारा भी वैसी ही बनना चाहती थी। लेकिन भला कैसे?

उस रात, जब सारा घर लौटी, उसने घुटनों के बल बैठ कर ईश्वर से प्रार्थना की। उसने केवल एक ही बात की कामना की, कि उसके बाल गिरने बंद हो जाएँ। अगली सुबह भी उसके तकिये पर टूटे हुए बाल थे, लेकिन उसने चिंता नहीं की। वह समझ चुकी थी कि उसे क्या करना है। क्योंकि उस रात उसे एक स्वप्न आया था - अफ्रीका का स्वप्न, जिसमें उसने देखी अफ्रीका की धरती, वहां की मिटटी, सवाना के लहलहाते घास के जंगल। उसने देखे वहां के पेड़-पौधे, फूल और पत्तियां। उसने कल्पना की, उन फूल पौधों से बनने वाले इत्रों और तेलों की, जिनका प्रयोग वह अपने बालों पर कर सकती थी।

वह तुरंत ही तैयारी में जुट गई। उसने खोज शुरू की अमेरिका में पाई जाने वाली वैसी ही जड़ी-बूटियों की, जिनसे वैसे ही तेल व इत्र बन सकते हों। उनमें से कुछ उसे आस-पास की दुकानों पर ही मिल गए, और कुछ उसने बाहर से मंगवाए।
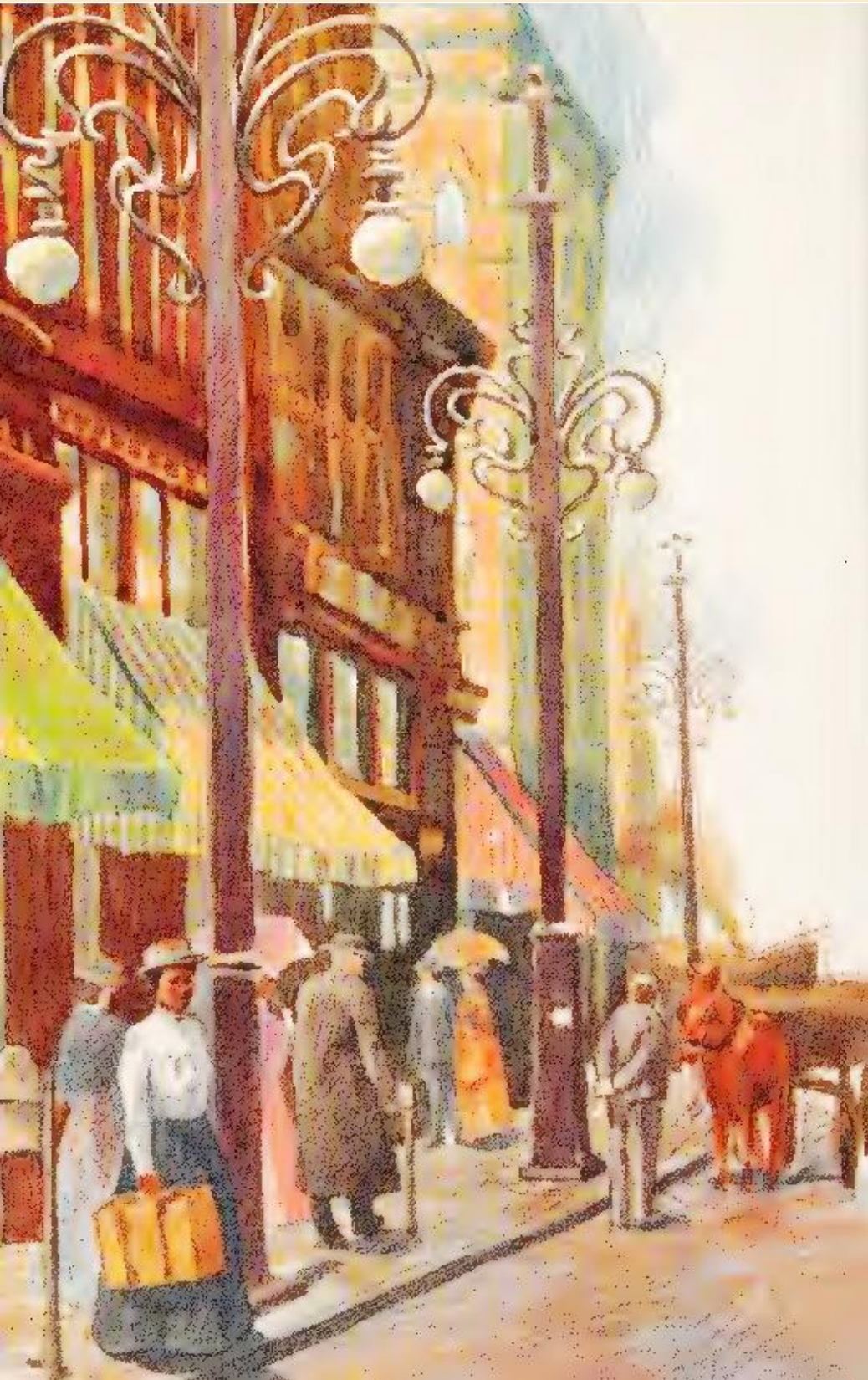
छठा अध्याय

डेनवर, कोलोराडो

१९०५-१९०८

जब सारा को पता चला की उसके भाई एलेक्स का देहांत हो गया है, तो वह उसकी पत्नी और बच्चों के पास डेनवर को चली गई। वहां उसने एक छोटा कमरा किराये पर ले लिया, जहाँ उसने एक काम-चलाऊ प्रयोगशाला बनाई और अपने शोध कार्य के लिए ज़रूरी सभी सामान, जैसे विभिन्न रसायनों से भरे कांच के बीकर वगैरा, जमा कर लिए। फिर उसने इनके सही अनुपात खोजने का शोध प्रारम्भ किया। इन प्रयोगों को करते समय वह लगातार सारी जानकारी एक नोटबुक में लिखती रहती थी। वह शब्दों की ठीक स्पेलिंग प्रयोग करने की कोशिश करती, लेकिन कुछ गलतियां भी हो जाती थीं।

सारा यह शोध कार्य रात को ही कर पाती थी। दिन में वह मिस्टर शॉल्ट्ज़ के लिए खाना बनाने का काम करती थी, जो डेनवर की सबसे बड़ी दवा कंपनी के मालिक थे। सारा की प्रयोगशाला के रसायनों में कुछ उन्हीं की कंपनी के थे।

जब सारा दवाई की खेप तैयार करती, जो उसे बिलकुल सही लगती, तो वह उसे अपने ऊपर इस्तेमाल करके देखती। जल्दी ही उसके बाल, जितने झड़ते, उससे अधिक नए उगने लगे। हालाँकि उसने काफी तेज़ रसायनों व जड़ी बूटियों का प्रयोग किया था, लेकिन उसके बालों पर कोई बुरा प्रभाव नहीं हुआ। जब सही अनुपात में उनका प्रयोग किया जाता तो वे उसके सर की त्वचा के लिए भी लाभकारी सिद्ध हुए, और वह स्वस्थ हो गई।

तब सारा ने अपना व्यापार शुरू करने का निश्चय किया।

******

जल्दी ही सारा ने तीन उत्पाद बिक्री के लिए तैयार कर लिए। "जड़ी-बूटी शैम्पू", "अद्‌भुत केश वर्धक" और "केश-कांति"। वह घर-घर जाकर अश्वेत महिलाओं के रसोईघरों में अपने उत्पादों का प्रदर्शन करती। पहले वह महिलाओं के बालों को जड़ी बूटी शैम्पू से धोती। फिर वह उनके सर की त्वचा में अद्‌भुत केश वर्धक का लेप करती। और फिर धातु के बने एक विशेष कंघे को आग पर गर्म करके उससे केश कांति उनके बालों में लगाती, जो एक ऐसा हल्का-फुल्का तेल था जो उनके सख्त घुंघराले बालों को मुलायम बना देता था।

प्रदर्शन करते समय सारा उनके सख्त उलझे हुए बालों को कभी "ख़राब बाल" नहीं कहती थी, न ही वह सुलझे और चमकदार बालों को "अच्छे बाल" कहती थी, क्योंकि इस प्रकार के "अच्छे बाल" गोरी औरतों के होते थे, जिनके मुकाबले अश्वेत औरतों के बाल "ख़राब" समझे जाते थे। सारा को लगता था कि ऐसी सोच और शब्दावली का प्रयोग अश्वेत महिलाओं के लिए अपमानजनक था।

बहुत सी ऐसे उत्पाद बनाने वाली कंपनियां, विशेषकर वे जो श्वेत लोगों की थीं, अश्वेत महिलाओं को बताने का प्रयास करतीं कि उनके बाल कितने बदसूरत थे। उनके विज्ञापन लम्बे सीधे बालों का महिमा-मंडन करते, जबकि गिरिजाघरों में अश्वेत पादरी सीधे बालों का विरोध करते, और ऐसे बाल रखने वाली अश्वेत महिलाओं को उलाहना देते कि उन्हें वैसा ही रहना चाहिए जैसा ईश्वर ने उन्हें बनाया है। सारा का मानना था कि दोनों ही ओर की बातें भ्रामक और व्यर्थ थीं, और एक महिला अपने बालों के साथ क्या करती है, यह उसका निजी मामला था, और इसमें किसी पुरुष का कोई हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए।

सारा ने जब अपनी कंपनी का पहला विज्ञापन निकाला तो उसमें किसी सीधे बालों वाली श्वेत महिला को नहीं दर्शाया गया था। विज्ञापन में सारा ने स्वयं का ही चित्र छापा। उसके विज्ञापन का केंद्र-बिंदु था स्वास्थ्य, सर की त्वचा का स्वास्थ्य। और इन विज्ञापनों में वह अपने स्वयं के लम्बे स्वस्थ बालों को दर्शाती।

और इसके अलावा एक और सन्देश भी था उसके विज्ञापनों में। कुछ शुरुआती विज्ञापनों में सारा के दो चित्र अगल बगल दिखाए गए थे। "पहले" वाले चित्र में उसके बाल छोटे और बारीक थे, और वह संकोच की मुद्रा में नीचे की ओर देख रही थी। और "बाद में" वाले चित्र में सारा के बाल लम्बे और स्वस्थ थे, और वह सीधे कैमरे की ओर देख रही थी। दूसरे चित्र में वह आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान से भरी नज़र आती थी। यह सन्देश अश्वेत महिलाओं की आँखों से छिपा न था।

उस समय सभी महिलाओं को, भले ही वे श्वेत हों या अश्वेत, न तो वोट देने का अधिकार था, और न ही संपत्ति का। अश्वेत लोगों के अधिकार अधिकांश स्थानों पर और भी कम थे। वे बहुत से भोजनालयों में भोजन नहीं कर सकते थे, उसके लिए अलग शौचालय और पीने के पानी की व्यवस्था थी, और बहुत से थिएटर और होटलों में उनका प्रवेश वर्जित था। पहले तो स्त्री, और वह भी अश्वेत, होने का अर्थ था किसी भी प्रकार के अधिकारों या प्रतिष्ठा का पूर्ण अभाव।

१९०५ में सारा ने चार्ल्स वॉकर से विवाह किया, जो सेंट लुइस से उसका पुराना मित्र था, और वह श्रीमती वॉकर बन गई। लेकिन उसने स्वयं के लिए "मादाम सी जे वॉकर" का नाम चुना। "मादाम" शब्द फ्रांस से सम्बद्ध था जो विश्व भर में अपने फैशन के लिए जाना जाता था, और जहां यह शब्द प्रतिष्ठा और सम्मान का सूचक था।

सारा ने अपनी कंपनी का नामकरण भी अपने नए नाम के अनुरूप ही किया, यानि "मादाम सी जे वॉकर मैन्युफैक्चरिंग कंपनी"।
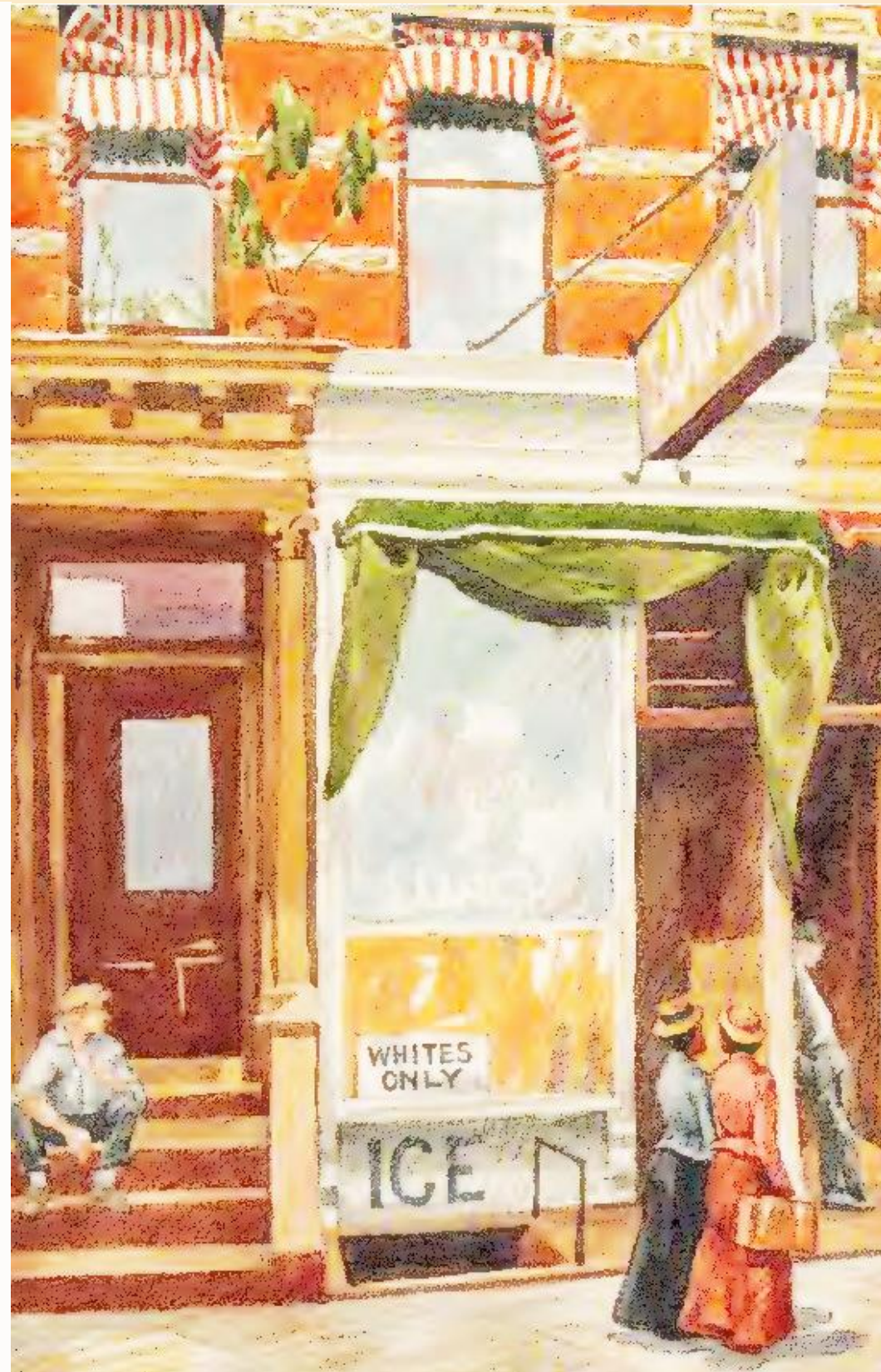
सातवां अध्याय

पिट्सबर्ग, पेनसिलवेनिया
१९०८-१९११

विवाह के कुछ समय बाद ही मादाम वॉकर ने अपनी कंपनी को पिट्सबर्ग स्थानांतरित कर लिया। पिट्सबर्ग में स्टील प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था, जिसका प्रयोग मादाम वॉकर कंघे बनाने में प्रयोग करती थीं, और अपने उत्पादों को अन्य शहरों में भेजने के लिए यहाँ से यातायात की सुविधा भी अधिक अच्छी थी। मादाम वॉकर अभी भी घर-घर जाकर अपने उत्पाद बेचती थीं। लेलिया ने अपनी शिक्षा समाप्त कर ली थी, और दोनों माँ-बेटी मिल कर अपने बिक्री-कर्मचारियों को अश्वेत महिलाओं के रसोई-घरों में जाकर उन्हें उत्पाद प्रदर्शित करने का प्रशिक्षण देती थीं।

वे सभी ग्राहकों को अपने भावी बिक्री-एजेंटों के रूप में भी देखती थीं। जो एजेंट मादाम वॉकर के उत्पाद बेचते थे, उन्हें प्रशिक्षण दिया जाता था कि वे ग्राहकों से न केवल उनके स्वास्थ्य और सौंदर्य के बारे में बात करें, बल्कि आत्म-निर्भर होने के बारे में भी। वे महिलाओं के सामने स्वतंत्र और गरिमामय जीवन की एक परिकल्पना प्रस्तुत करतीं। यानि एक अच्छी पत्नी व् माँ होने के साथ-साथ एक बिक्री-एजेंट या केश-सज्जा विशेषज्ञ जैसे सम्मानित पेशे के द्वारा धन अर्जन की सम्भावना।

जब ये एजेंट ग्राहकों के पास जातीं, तो उनसे कंपनी के लिए कार्य करने के फायदों का भी ज़िक्र करतीं। और यह भी बतातीं कि ऐसा करके वे तुरंत ही ५ डॉलर प्रति सप्ताह की आमदनी पाना शुरू कर सकती हैं, जो कि एक बहुत अच्छी राशि थी। उन दिनों एक अश्वेत महिला अधिक से अधिक २.५० डॉलर प्रति सप्ताह ही अर्जित कर पाती थी, जबकि अश्वेत पुरुष अधिकाधिक ५ डॉलर प्रति सप्ताह तक कमा लेते थे। इसके विपरीत श्वेत पुरुष १७ डॉलर प्रति सप्ताह तक कमा लेते थे।

१९८० तक, यानि कंपनी शुरू करने के केवल दो वर्ष बाद, मादाम वॉकर ने लगभग १०० एजेंटों की फ़ौज खड़ी कर ली थी। वह ग्राहकों के घरों को जाकर भी बिक्री करती थीं, और डाक के द्वारा भी। मादाम सी जे वॉकर मैन्युफैक्चरिंग कंपनी लगभग ४०० डॉलर प्रति सप्ताह का मुनाफा कमा रही थी।

उसी वर्ष पिट्सबर्ग में मादाम वॉकर ने "लेलिया केश-सज्जा प्रशिक्षण संस्थान" की स्थापना की। गृहिणियों के अलावा कपडे धोने व नर्स के पेशों से जुडी महिलाएं बड़ी संख्या में इस संस्थान में पेशेवर प्रशिक्षण लेने आने लगीं, ताकि उन्हें आर्थिक आज़ादी और गरिमामय जीवन मिल सके।

कुछ वर्षों बाद मादाम वॉकर ने पिट्सबर्ग का व्यापार लेलिया के हवाले कर दिया, और स्वयं इंडियानापोलिस को आ गई, जो कि देश के लगभग केंद्र में स्थित था, और राष्ट्रव्यापी यातायात व्यवस्था से जुड़ा था। अब तक कंपनी की आय बढ़ कर लगभग ३००० डॉलर प्रति सप्ताह हो गई थी। उन दिनों, यानि १९११ में, किसी अश्वेत महिला द्वारा संचालित व्यापार की इतनी अधिक आय होना लगभग कल्पना के परे की बात थी।

आठवां अध्याय

इंडियानापोलिस, इंडियाना

१९११-१९१८

मादाम वॉकर ने अथक परिश्रम किया, लेकिन उनकी व्यापार के अलावा अन्य रुचियाँ भी थीं। उन्हें सिनेमा देखना का बहुत शौक था। एक शाम वह आइसिस सिनेमाघर गईं, और टिकट खरीदने के लिए खिड़की पर पर बैठी महिला की ओर १० सेंट का सिक्का बढ़ाया। लेकिन उस महिला ने वह सिक्का वापस कर दिया।

"पच्चीस सेंट दीजिये, जो कि अश्वेत लोगों के लिए टिकट का दाम है," उस महिला ने कहा।

मादाम वॉकर का खून जैसे जम सा गया। लेकिन उस महिला से कुछ कहने का कोई लाभ नहीं था। वह सीधे मिस्टर रैनसम के पास गई, जो कि उनके वकील थे, और उनको निर्देश दिया कि वह आइसिस सिनेमा पर जातिगत भेदभाव का मुकदमा दायर करें। फिर उन्होंने एक आर्किटेक्ट को काम पर रखा और "वॉकर भवन" नाम की एक नई इमारत का डिज़ाइन बनाना शुरू किया। यह ईमारत एक बहुत बड़े क्षेत्र में बननी थी और इसमें ऑफिस व फैक्ट्री के अलावा नगर के अश्वेत लोगों के लिए एक सुन्दर सिनेमाघर भी बनाया जाना था। यह इंडियानापोलिस के लोगों के सांस्कृतिक जीवन के लिए मादाम वॉकर के योगदान की शुरुआत थी।

समाज के आर्थिक क्षेत्र में उनका योगदान पहले ही प्रतिष्ठित हो चुका था। मादाम वॉकर के अधिकांश कर्मचारी उनके मुख्यालय के नज़दीक के अश्वेत मुहल्लों में बसने वाली महिलाएं ही थीं। कुछ महिलाओं को एजेंट बनने का व कुछ को केश-सज्जा का प्रशिक्षण दिया गया था। जबकि कुछ ऑफिस में लिखा-पढ़ी का काम व फैक्टरी में उत्पाद बनाने, पैक करने व उन्हें ग्राहकों को भेजने का काम करती थीं।

ऐलिस केली, जो कि एक स्कूल की अध्यापिका थी, शायद अमेरिका की पहली महिला सुपरवाइजर बनी। क्योंकि ऐलिस मादाम वॉकर से अधिक अच्छा पढ़-लिख सकती थी, उसे अन्य कर्मचारियों को पत्र लिखने व अंग्रेजी व्याकरण के प्रशिक्षण का कार्य सौंपा गया।

१९१२ तक इंडियानापोलिस की फैक्टरी में सैकड़ों कर्मचारी काम कर रहे थे, और घर-घर जाकर बिक्री करने वालों की संख्या तो हज़ारों में थी। अब मादाम वॉकर की कंपनी अमेरिका की सबसे बड़ी कंपनियों में से एक हो गई थी।

शालीन पोशाक पहने बैठी वह बुकर टी वाशिंगटन को बड़े ध्यान से सुन रही थी। उसे याद था कि वह उनसे और मार्गरेट वाशिंगटन से पहले भी मिल चुकी थी, जो की उसकी प्रथम प्रेरणा-स्रोत थीं।
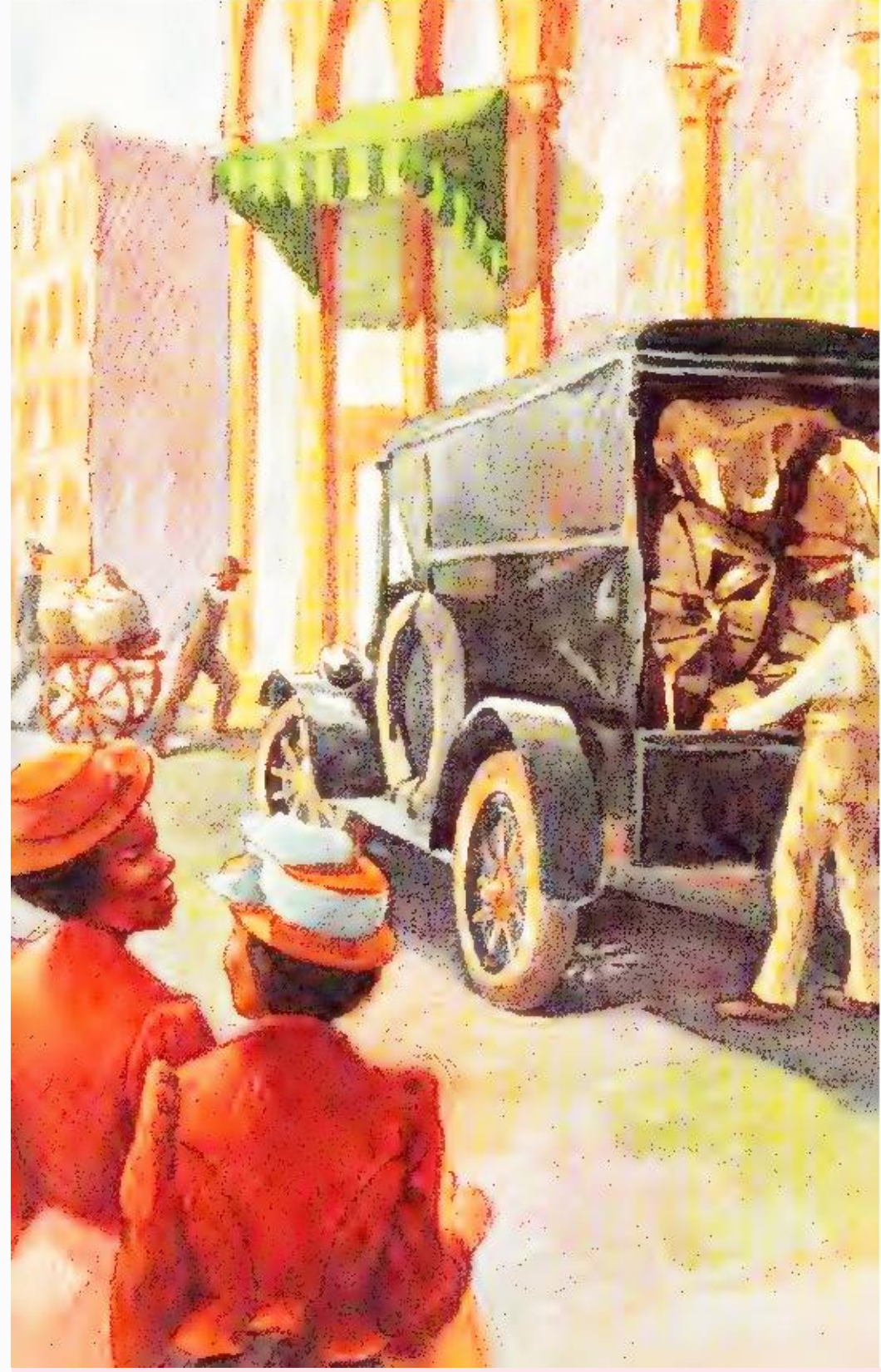
मिस्टर वाशिंगटन ने कई अश्वेत पुरुषों का परिचय कराया, जिन्होंने अपने व्यापारों की सफलता के विषय में जानकारी दी। मादाम वॉकर ने कई बार उनका ध्यान आकर्षित करने का प्रयत्न किया, लेकिन उन्होंने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। अंततः वह अधीर हो उठ खड़ी हुई, और बोली, "आप मुझे नज़रअंदाज़ कैसे कर सकते हैं। मुझे लगता है कि मैंने जो व्यापारिक सफलता पाई है, वह हमारी जाति की महिलाओं के लिए फख्र की बात है।"

पूरे सभागार में चुप्पी छा गई। मिस्टर वाशिंगटन कुछ असहज नज़र आ रहे थे। यह राष्ट्रिय नीग्रो व्यापार संघ का अधिवेशन था, जो कि सफलता की ऊंचाइयों को छूने वाले अश्वेत पुरुषों का एक सम्मलेन था। अश्वेत महिलाएं तो अधिकतर घर के चूल्हे-चौके, साफ़-सफाई और बच्चों की परवरिश में ही फँसी रहती थीं।

"मैं वह महिला हूँ जो दक्षिण के कपास के खेतों से उठ कर आई हूँ। जिसके बाद मुझे धोबन का काम करना पड़ा। फिर मैंने स्वयं का केश-उत्पादों का व्यापार शुरू किया। मेरी अपनी फैक्ट्री है, जो मैंने अपनी ही खरीदी हुए ज़मीन पर खड़ी की है।"

मादाम वॉकर जब बोल रही थीं, तो सभागार में हर कोई कान लगाकर सुन रहा था। भले ही उन्होंने कपास के कीड़ों को स्वयं न छुआ व देखा हो, उन्हें उसके बारे में पता अवश्य था। और भले ही उन्होंने लम्बी टोपी वाले कु-क्लक्स-क्लान के नफरती लोगों को गिरिजाघर और स्कूल को जलाते हुए न देखा हो, लेकिन वह उसकी जली हुई राख की महक जैसे महसूस कर पा रहे थे।

"मेरा मकसद जीवन में केवल अपने लिए धन अर्जित करने का नहीं था। बल्कि इस अर्जित धन के एक हिस्से को दूसरों की सहायता के लिए लगाने का था।" मादाम वॉकर ने आगे बोला। उस सम्मेलन में अन्य किसी ने भी यह बात नहीं कही थी। इन शब्दों के साथ मादाम वॉकर ने सिद्ध कर दिया कि दर-असल उनका योगदान उस सभागार में उपस्थित पुरुषों से कहीं अधिक था।

वह कपास के खेतों या लांड्री के टब तक ही सीमित नहीं रह गई।
अपने अथक प्रयास और आत्म-विश्वास के बल पर सारा ब्रीडलव वॉकर
एक सशक्त और स्वाधीन महिला बन कर उभरी थी,
और उसने हज़ारों अन्य अश्वेत महिलाओं
को अपने साथ लेकर उन्हें एक
नया रास्ता दिखाया था।
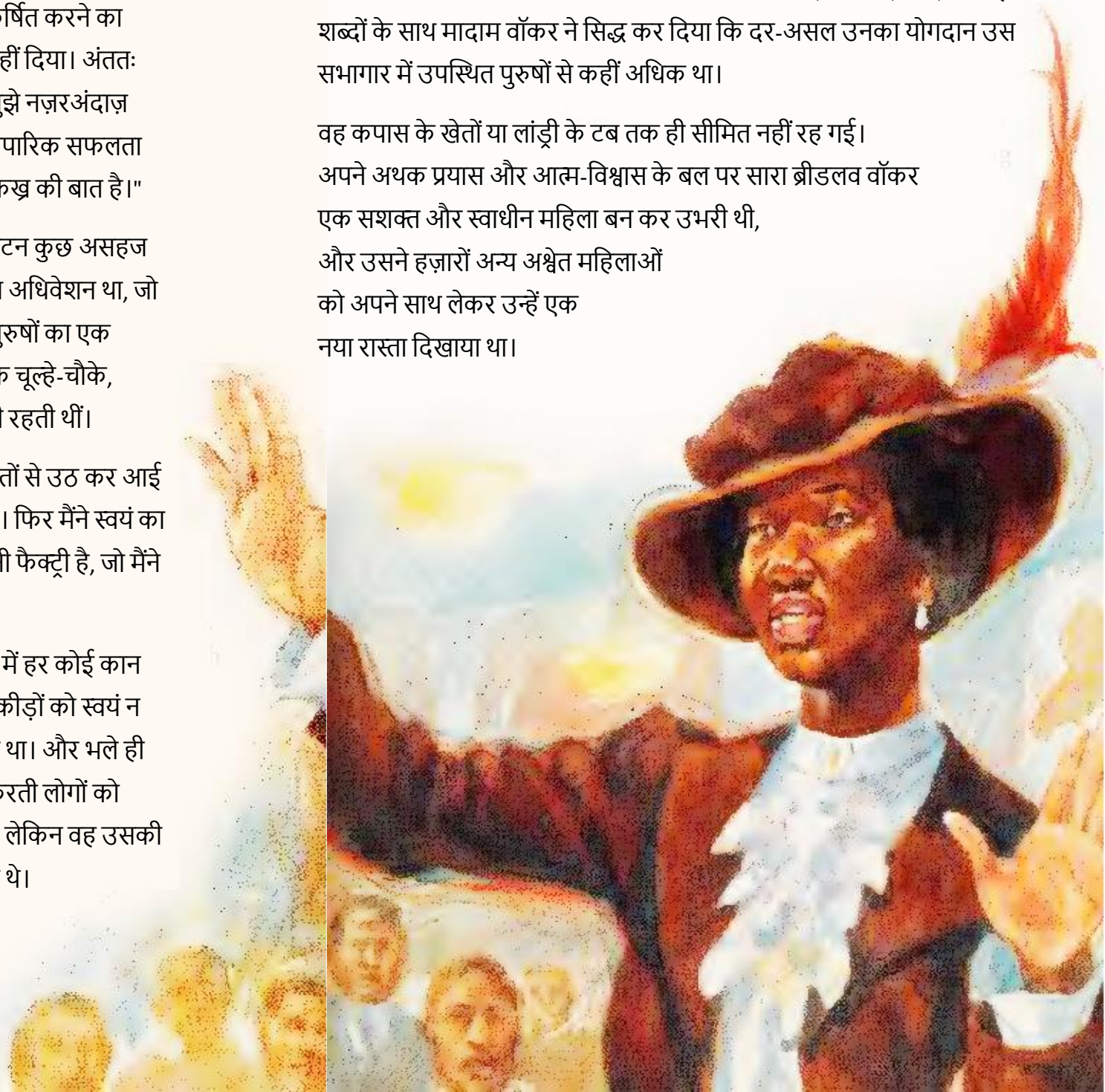
उपसंहार

जैसे जैसे मादाम वॉकर अधिक धनवान होती गईं, उन्होंने अपनी जाति के लोगों के प्रति उतना ही अधिक योगदान दिया। वह औरों को भी ऐसा ही योगदान करने की प्रेरणा देना चाहती थीं। उनकी कंपनी के जो कर्मचारी अपने समाज के हितार्थ दान देते थे, उन्हें कम्पनी द्वारा सम्मानित किया जाता था। "मैं समाज को दर्शाना चाहती हूँ कि हमारे एजेंट केवल अपने लिए धनार्जन नहीं कर रहे, वे उससे आगे बढ़ कर कुछ कर रहे हैं।"

लेकिन मादाम वॉकर पूरे ठाट-बाट से रहती थीं। वह अपने लिए महंगे कपडे और गाड़ियां खरीदती थीं, और १९१८ में उन्होंने "विला लेवारो" को अपना निवास-स्थान बनाया, जो कि हडसन न्यूयॉर्क में उनके द्वारा बनाया गया एक बहुत ही आलीशान बंगला था। मादाम वॉकर जानती थीं कि उनके वैभव व सम्पन्नता के कारण लोग उनकी बात सुनते थे। इसलिए राजनीति और जातिगत विषयों पर उनकी मुखरता बढ़ती ही गई।

वह हारलेम (न्यूयॉर्क की एक अश्वेत बस्ती) की गलियों में घूम घूम कर जाग्रति फैलाती। एक बार अश्वेत लोगों के विरुद्ध हिंसा का विरोध जताने के लिए वह अन्य संभ्रांत अश्वेत लोगों के साथ वाइट हाउस तक पहुँच गईं, और राष्ट्रपति विल्सन से मुलाकात की मांग की। लेकिन इन लोगों से कहा गया कि राष्ट्रपति बहुत व्यस्त हैं, और उनसे नहीं मिल सकते, क्योंकि वह कृषि जानवरों के चारे से सम्बंधित एक महत्वपूर्ण कानून पर चर्चा में व्यस्त हैं। तो मादाम वॉकर का गुस्सा फूट पड़ा : "आप पशुओं के चारे की बात कर रहे हैं, जब कि अश्वेत लोग सड़कों पर हत्या का शिकार हो रहे हैं।"

अप्रैल १९१९ में सेंट लुइस के व्यापारिक दौरे के समय मादाम वॉकर गंभीर रूप से अस्वस्थ हो गईं। एक विशेष निजी डब्बे में सवार वह रेलगाड़ी से तुरंत अपने घर की ओर चल पड़ीं।

घर वापस आकर उन्होंने अपने लेखाधिकारी को निर्देश दिया कि तुरंत ५००० डॉलर की रकम उस फण्ड को दान में दी जाय, जो अश्वेत लोगों पर हो रहे हमलों से उनकी रक्षा के लिए स्थापित किया गया था। यह फण्ड "अश्वेत लोगों की प्रगति की राष्ट्रीय समिति" (NAACP : National Association for Advancement of Coloured People) नामक संस्था द्वारा स्थापित किया गया था। यह इस संस्था को मिली अब तक की सबसे बड़ी दान-राशि थी। मादाम वॉकर का स्वास्थ्य तेज़ी से गिर रहा था। अंततः वह इतनी अशक्त हो गईं कि वह बमुश्किल फुसफुसा कर ये शब्द बोल पाईं, "मैं ज़िंदा रहना चाहती हूँ, अपने लोगों की सहायता करने के लिए"। फिर उनकी आँखें बंद हो गईं, और उनका देहांत हो गया। तब वह इक्यावन वर्ष की थीं।

उनकी मृत्यु के बहुत वर्षों बाद भी जब तक उनकी कंपनी व्यापार-रत रही, उसकी अध्यक्षता एक महिला ने ही की, जैसी कि मादाम वॉकर की अंतिम इच्छा थी। हालांकि उनके द्वारा स्थापित कंपनी अब बंद हो चुकी है, इस कंपनी ने "मादाम वॉकर थिएटर केंद्र" की स्थापना की, जो इंडियानापोलिस व आस-पास के क्षेत्रों में अश्वेत समाज की सेवा की उनकी विरासत को कायम रखे हुए है।

चित्र-सज्जाकार का कथन

जब मैं छोटी थी, मैं अपनी माँ से पूछती थी कि मेरे बाल लहलहाते हुए क्यों नहीं हैं। मैं चाहती थी कि जब मैं चलूँ, अपना सर हिलाऊं, या जब हवा चले, तो मेरे बाल लहराया करें। लेकिन मेरे बाल कड़े और गट्ठे जैसे थे, उन श्वेत महिलाओं के सीधे-सरल बालों से बिलकुल भिन्न, जिन्हें मैं टीवी पर देखती थी। न ही मेरे बाल सुडौल पोनीटेल वाली उन गोरी लड़कियों जैसे थे, जो मुझे सड़क पर अक्सर दिखाई देती थीं। मेरी माँ कहती थी कि मेरे बाल प्राकृतिक रूप से जैसे भी हैं, मुझे उनसे प्रेम करना चाहिए। ऐसा करना मेरे लिए आसान भी था, क्योंकि माँ मेरे बालों को तरह तरह की केश-सज्जा बना कर संवारा करती थी, कभी कई लम्बी चोटियों बना कर, तो कभी मोटा सा जूडा बना कर।

मैं अन्य अश्वेत किशोरियों को भी जानती थी, जो अपने बालों को लेकर मेरे जैसा ही महसूस करती थीं। वर्षों से हमें सुंदरता के वही मापदंड सिखाये गए थे, जो गोरी महिलाओं के सार्वजनिक चित्रण द्वारा समाज में स्थापित किये गए हैं। नतीजन, अधिकांश अश्वेत महिलाओं को अपने बालों का प्राकृतिक रंग-रूप ज़रा भी नहीं भाता, और उन्हें देखने में वे बदसूरत नज़र आते हैं, और रख-रखाव में झंझटी। जबकि सच यह है कि ऐसी बहुत सी आकर्षक केश-सज्जायें हैं, जिन्हें अश्वेत महिलाएं अपना सकती हैं, लेकिन फिर भी उनमें से अधिकांश को श्वेत महिलाओं जैसे सीधे बाल रखना ही पसंद आता है। मादाम वॉकर एक महान व्यापारी और समाज-सेविका थीं, लेकिन वह एक अग्रगामी महिला और अन्वेषक भी थीं। उन्होंने ऐसे उत्पादों का निर्माण किया जिनसे महिलाओं की त्वचा सुन्दर व स्वस्थ रहती थी। अश्वेत महिलाओं की अपने बालों के रख-रखाव को आसान बनाने की इच्छा का भी उन्होंने समाधान खोजा।

एक महिला अपने बाल सीधे रखे या नहीं, यह महत्वपूर्ण नहीं है, क्योंकि उसका सौंदर्य उसके अंदर से भासमान होता है। सुंदरता अनेक प्रकार की होती है। मेरी व्यक्तिगत राय है कि बालों को स्वस्थ रखना कहीं अधिक महत्वपूर्ण है, बजाय इसके कि वे दिखते कैसे हैं।

नेका बेनेट